नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

डॉ. एन. सुंदरम और अनुपम मिश्र को दी श्रद्धांजलि

सुविख्यात हिंदी-तमिल साहित्यकार, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्विवद्यालय की प्रथम कार्यपरिषद् के सदस्य डॉ. एन. सुन्दरम और प्रख्यात गांधीवादी पर्यावरणविद अनुपम मिश्र के निधन पर हिंदी विश्वविद्यालय में सोमवार को एक शोकसभा में श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।

डॉ. एन सुंदरम का 18 दिसंबर 2016 को पूर्वाह्न 10 बजे चेन्नई में निधन हो गया । वे लगभग 87 वर्ष के थे । उनका जन्म 28 अप्रैल 1930 को पेरियकुलम, तमिलनाडु में हुआ था। उन्होंने 'मीरा और आण्डाल का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की थी। वे विश्वविद्यालय में 'तमिल शैव साहित्य अनुवाद परियोजना' के संयोजक एवं अनुवादक रहे। इस परियोजना के अंतर्गत उनके द्वाराअनूदित ग्रंथ 'सुन्दरर सप्तम् तिरुमुरै' इस विश्वविद्यालय से प्रकाशित है । उन्होंने 'भारतीय कहावत कोश' का तीन खण्डों में संपादन किया। वे कुशल अनुवादक थे। उन्होंने हिंदी से तमिल और तमिल से हिंदी में बहुत सा अनुवाद कार्य किया। उनकी प्रमुख अनूदित कृतियों में हैं – 'सुब्रह्मण्य भारती की राष्ट्रीय कविताएँ', 'अर्धनारीश्वर', 'तिरुक्कुरल', 'पंचाली शपथम्', 'तिरुवाचकम्', 'तेवारम्' आदि । सुन्दरम जी की मूल तथा अनूदित रचनाओं की संख्या लगभग 50 है । उन्हें साहित्य सेवा के लिए उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ का सौहार्द सम्मान, केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा का भारती पुरस्कार, केंद्रीय हिंदी निदेशालय दिल्ली का हिंदी लेखक पुरस्कार आदि से विभूषित किया गया । डॉ. सुन्दरम आजीवन हिंदी की सेवा में रत रहे । उनका निधन हिंदी-तमिल साहित्य जगत के लिए अपूरणीय क्षति है।

शोकसभा में प्रख्यात गांधीवादी पर्यावरणविद अनुपम मिश्र का आज सवेरे अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में निधन हो गया। वे 68 वर्ष के थे। आधुनिकता से दूर शांतिप्रिय अनुपम मिश्र का अज्ञेय की तरह अपना कोई घर नहीं था। वह गांधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली के परिसर में ही रहते थे। उनके पिता भवानी प्रसाद मिश्र एक प्रख्यात कवि और महात्मा गांधी के शिष्य थे। भवानी भाई ने वर्धा के महिला आश्रम में बतौर शिक्षक काम किया था, जहाँ 1948 में अनुपम मिश्र का जन्म हुआ था। अनुपम मिश्र गांधी शांति प्रतिष्ठान के ट्रस्टी एवं राष्ट्रीय गांधी स्मारक निधि के उपाध्यक्ष थे। इनके द्वारा पर्यावरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के लिये इंदिरा गांधी राष्ट्रीय पर्यावरण पुरस्कार, जमनालाल बजाज, चंद्रशेखर आजाद पुरस्कार सहित कई अन्य पुरस्कारों से नवाजा गया था। जल संरक्षण पर लिखी उनकी किताब '**आज भी खरे हैं तालाब**' एक अद्भुत पुस्तक है। अपने रचना काल से ही वह काफी चर्चित रही है। देश-विदेश की कई भाषाओं में उसका अनुवाद हुआ। उनकी अन्य चर्चित किताबों में 'राजस्थान की रजत बूंदें' और 'हमारा पर्यावरण' है। पद-प्रतिष्ठा से दूर एकांत प्रिय अनुपम मिश्र ऐसे पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने देश में पर्यावरण पर तभी काम शुरू किया जब सरकार में पर्यावरण का कोई विभाग तक नहीं था। आज उनके द्वारा चलाये गये पर्यावरण संरक्षण मुहिम का समाज अपने तरीके से न केवल लाभ उठा रहा है अपितु उस दिशा में वैज्ञानिक ढंग से काम भी कर रहा है। वर्धा की पावन भूमि पर जन्मे अनुपम मिश्र और डॉ. एन. सुंदरम को उनके असामयिक निधन पर विवि के प्रशासनिक भवन में श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। शोक सभा में प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा सहित अध्यापक, अधिकारी एवं कर्मी उपस्थित थे।